ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal

अक्टूबर-दिसम्बर / Oct.-Dec., 2021

वर्ष/Year-10 अंक/Vol.-40

द्विभाषी/Bilingual

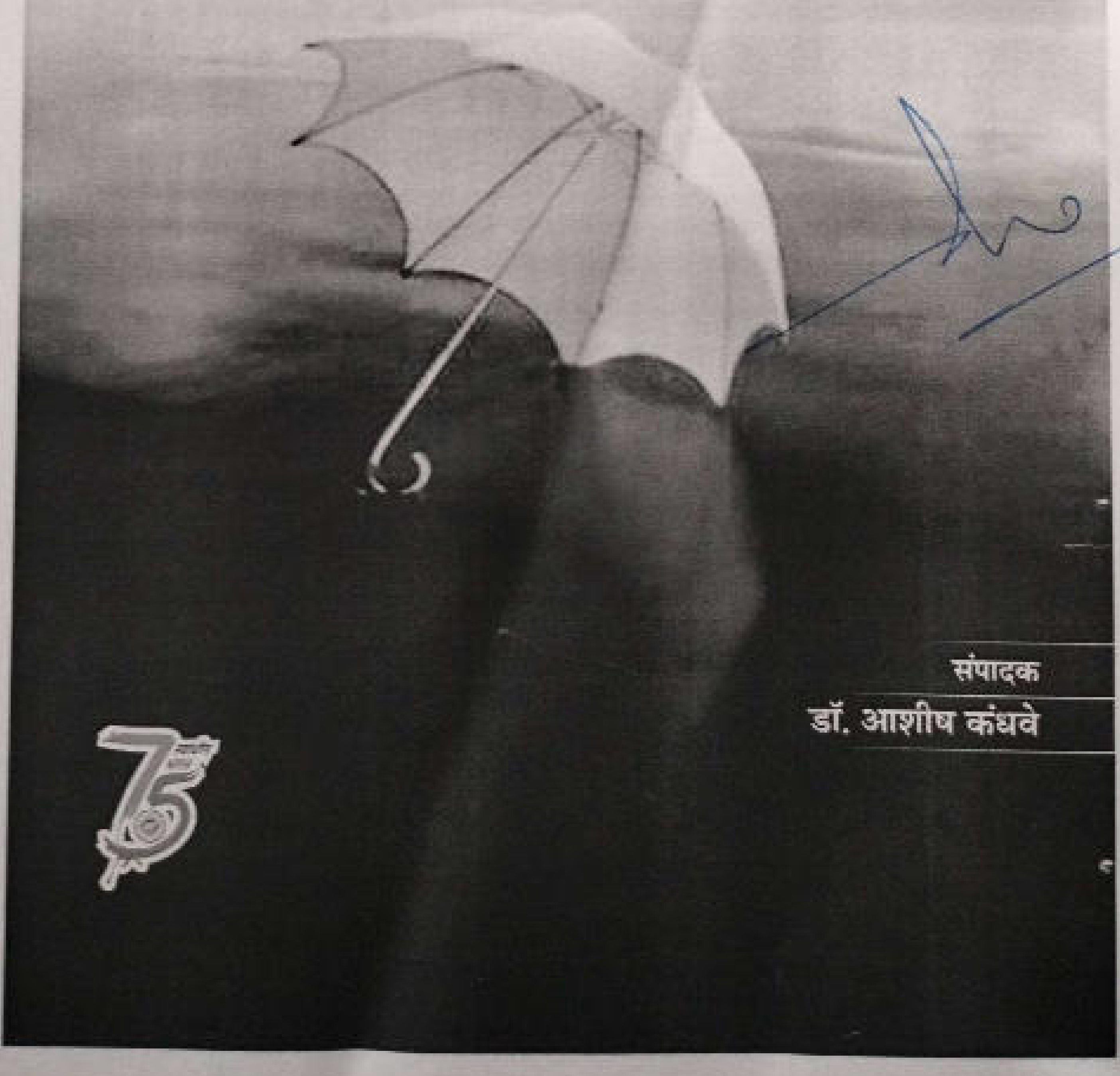

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

अनुक्रम

संपादकीय

• डॉ. आशीष कंधवे / दृश्यादृश्या च भवति तत्र तत्र सरस्वती / 7

दृष्टि-सृष्टि

• आदर्श कुमार सिंह / पर्यटन-क्या भारत के लिए अगला बड़ा कदम हो सकता है? / 13

कथा-संसार

• उदयवीर सिंह / धूप शिगाफों की / 18

काव्य-कलश

• अनामिका कुमारी / कविताएं / 22
• डॉ. मधु पाठक / कविताएं / 24

शोध-संसार

• डॉ. पुरुषोत्तम कुंडे / अपने-अपने राम : मराठी भाषा में रामकाव्य / 26
• डॉ. गौकरण प्रसाद जायसवाल / कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी'... / 30
• डॉ. शैलजा / नवें दशक की हिंदी कहानी में जातीय संस्कृति / 37
• डॉ. रश्मि श्रीवास्तव एवं सुनील कुमार दूबे / राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)... / 41
• डॉ. हेना / आधुनिकता और अज्ञेय की कविता / 47
• डॉ. अंशु यादव / बदलते दौर का हिंदी सिनेमा और भारतीय समाज / 54
• डॉ. महेन्द्र प्रजापति / हिंदी सिनेमा में थर्ड जेंडर / 60
• डॉ. प्रभांशु ओझा / नवजागरण की यात्रा और भारतेंदु का रंगकर्म / 66
• मोहन बैरागी एवं डॉ. अविनाश कुमार अस्थाना / संवेदनात्मक बिंब और... / 72
• चुन्नीलाल / हिंदी व्यंग्य-साहित्य के विकास में गिरीश पंकज का योगदान / 77
• डॉ. आशीष पाण्डेय / आत्मनिर्भर भारत : अतीत के सामाजिक संगठन... / 85
• डॉ. आकांक्षा प्रजापति एवं डॉ. विकास प्रजापति / खूब खेली मर्दानी वो तो भारत... / 90
• विनीता मिश्रा / विज्ञापनों की भाषा और हिंदी की शब्द-संपदा / 95
• डॉ. संतोष कुमार पांडेय तथा आलोक कुमार / नदियों के देश में जलसंकट... / 100
• हिमांशु शेखर / सरदार शहर तहसील की कृषक महिलाओं की समस्याएं... / 109
• प्रीति गुप्ता एवं डॉ. दीपिक विजयवर्गीय / चीफ की दावत : वर्तमान युग पर व्यंग्य / 115
• डॉ. सुनील कुमार सेन एवं अश्वनी कुमार मिश्र / वर्तमान संदर्भ में विवेकानंद... / 119
• डॉ. अशोक कुमार / सूचना प्रौद्योगिकी का हिंदी भाषा पर प्रभाव / 123
• कुशल महंत / असमिया विवाह के गीतों में प्रतिबिंबित राम कथा... / 129
• अंकिता शाम्भवी वर्मा / बंगाल के निरक्षर सहज साधक बाउल... / 134
• आशीष कुमार तिवारी / बाजारवादी ताकतों को चुनौती देती हिंदी कविता / 139
• डॉ. आलोक प्रभात / छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना / 144
• डॉ. विजय कुमार मिश्र / हिंदी सिनेमा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य / 148
• प्रो. खेमसिंह डहेरिया / स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी / 154
• डॉ. सविता डहेरिया / हिंदी उपन्यासों में जनजातीय सांस्कृतिक परिवेश / 160

वर्तमान सन्दर्भ में विवेकानंद के मानवीय मूल्य का अनुशीलन

—डॉ. सुनील कुमार सेन
—अश्वनी कुमार मिश्र

स्वामी विवेकानंद ने मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया तथा मूर्तिपूजा व बहुदेववाद का समर्थन किया। इसी कारण उन्नीसवीं शताब्दी में उन्हें नव हिन्दू जागरण का संस्थापक कहा गया। सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा "जहाँ तक बंगाल का सम्बन्ध है हम विवेकानंद को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का अध्यात्मिक पिता कह सकते हैं।" इन्डियन अनरेस्ट के लेखक चिरोल ने कहा "वह प्रथम हिन्दू थे जिनके व्यक्तित्व से भारत की प्राचीन सभ्यता और राष्ट्र होने के उसके नवजात हक के लिये विदेश में निर्णायक स्वीकृति प्राप्त है।"

उन्नीसवीं शताब्दी के नव हिन्दू जागरण के संस्थापक और आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन के पिता स्वामी विवेकानंद थे, उनके सिद्धांतों का मूलाधार वेदांत दर्शन था। विवेकानंद भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के ज्ञाता थे। उन्होंने 1891 में सम्पूर्ण भारत भ्रमण किया और वहाँ की गरीबी व भुखमरी का प्रत्यक्ष अनुभव किया। उनका मानना था कि शिक्षा से पहले हमें रोटी के मूल प्रश्न को हल करना होगा। स्वामी विवेकानंद ने मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया तथा मूर्तिपूजा व बहुदेववाद का समर्थन किया। स्वामी जी ने पाश्चात्य जगत के लोगों के हृदय में मानव जाति के एकत्व की अनुभूति करायी। स्वामी जी सम्पूर्ण मानवता का कल्याण करना चाहते थे। वे मानवता की सेवा को ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा मानते थे। वे समाज के सभी व्यक्तियों को धन विद्या तथा ज्ञान का उपार्जन करने के लिए एक समान अवसर देने के पक्षधर थे। वे जनसमूह साधारण की शिक्षा द्वारा बुद्धि का प्रसार करना चाहते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के नव हिन्दू जागरण के संस्थापक और आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन के पिता स्वामी विवेकानंद का जन्म कलकत्ता में विश्वनाथ दत्त एवं भुवनेश्वरी देवी की संतान के रूप में हुआ। इनके बचपन का नरेन्द्र नाथ दत्त था। स्वामी जी ने वेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उनके सिद्धांतों का मूलाधार वेदांत दर्शन था। विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस का मनना था कि संसार के सभी धर्म सच्चे रूप में ईश्वर तक पहुँचने के विभिन्न मार्ग हैं। उन्होंने धर्म की एकता और मानव सेवा पर सर्वाधिक बल दिया। विवेकानंद भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के ज्ञाता थे। उन्होंने 1891 में सम्पूर्ण भारत भ्रमण किया और यहाँ की गरीबी व भुखमरी

का प्रत्यक्ष अनुभव किया। इसलिए उनका मानना था कि शिक्षा से पहले हमें रोटी के मूल प्रश्न को हल करना होगा।

युवाओं के शारीरिक, मानसिक सौष्ठव को तवज्जो देते थे। भ्रमण के दौरान राजस्थान में खेतड़ी रियासत के महाराज कुँवर अजीत राज सिंह के सुझाव पर उन्होंने अपना नाम बदलकर विवेकानंद रखा और महाराज के खर्च पर 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। 11 सितम्बर 1893 को इन्होंने अपना ओजपूर्ण भाषण दिया और सुप्रसिद्ध हो गये। विवेकानंद के भाषण के विषय में द न्यूयार्क हेराल्ड ने लिखा कि विवेकानंद का भाषण सुनने के पश्चात ऐसा लगता है कि भारत जैसे देश में जहाँ स्वामी जैसे ज्ञानी रहते हैं, सुधरने के लिए पश्चिम से प्रचारक भेजने की बात कितनी मूर्खतापूर्ण है। उनका मानना था कि विश्व पर सर्वहारा वर्ग और दलितों का शासन होगा। विवेकानंद तीन वर्ष तक शिकागो में रहे और इस दौरान फरवरी 1896 ई. में न्यूयार्क में वेदांत सोसायटी और कैलिफोर्निया में शांति आश्रम की स्थापना की। विवेकानंद ने पूरे अमेरिका एवं इंग्लैंड, फ्रांस, स्विट्जरलैंड तथा जर्मनी की यात्रा की और चार वर्ष विदेशों में भ्रमण के पश्चात वापस भारत लौटे। 1897 ई. में स्वदेश वापस आने पर इन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। 1899 में कलकत्ता के पास बेलूर में रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय स्थापित किया और दूसरा मुख्यालय अल्मोड़ा के पास मायावती स्थान पर बनाया। 1899 में पुन: अमेरिका गए तथा 1900 ई. में उन्होंने पेरिस में आयोजित द्वितीय धर्म सम्मेलन जिसका शीर्षक था 'कांग्रेस ऑफ हिस्ट्री ऑफ़ रिलीजन्स' में भाग लिया। 4 जुलाई 1902 को कलकत्ता में इनका देहावसान हो गया।

स्वामी विवेकानंद ने मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया तथा मूर्तिपूजा व बहुदेववाद का समर्थन किया। इसी कारण उन्नीसवीं शताब्दी में उन्हें नव हिन्दू जागरण का संस्थापक कहा गया। सुभाष चन्द्र बोस ने लिखा "जहाँ तक बंगाल का सम्बन्ध है हम विवेकानंद को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का अध्यात्मिक पिता कह सकते हैं।" इन्डियन अनरेस्ट के लेखक चिरोल ने कहा "वह प्रथम हिन्दू थे जिनके व्यक्तित्व से भारत की प्राचीन सभ्यता और राष्ट्र होने के उसके नवजात हक़ के लिये विदेश में निर्णायक स्वीकृति प्राप्त है।" विवेकानंद ने अपनी पुस्तक में समाजवादी हूँ के माध्यम से भारत के सवर्ण वर्ग से अपने पद और सुविधाओं का परित्याग करते हुए निम्न वर्ग के साथ मिलकर जीने का आह्वान किया। आयरिश मूल की महिला मार्ग्रेट नोबल जिन्हें सिस्टर निवेदिता के नाम से जाना जाता है, विवेकानंद की शिष्या बनी और रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्वामी जी के विचारों का प्रचार-प्रसार किया।

रविन्द्र नाथ टैगोर ने विवेकानंद को सृजन की प्रतिभा कहा था। सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि विवेकानंद में बुद्ध का हृदय और शंकराचार्य की बुद्धि थी तथा वे आधुनिक भारत के

स्वामी जी का कथन है कि रोटी का प्रश्न हल किए बिना भूखे मनुष्य धार्मिक नहीं बनाये जा सकते। उनका मूलमंत्र था कि सहायता न कि विरोध, दूसरे के भावों की स्वीकृति न कि विनाश, समन्वय व शांति न कि कलह। स्वामी जी का मानना था कि यदि तुम मनुष्य के दर्शन नहीं कर सकते तो तुम उसे बादलों में, मूर्तियों में, मृत पदार्थों में तथा अपनी बुद्धि की संकुचित कल्पनाओं में कैसे देख सकते हो? मैं तुम्हें उसी दिन से धार्मिक समझने लगूँगा जिस दिन से तुम पुरुषों एवं स्त्रियों के दर्शन में ईश्वर के दर्शन करने लगोगे। यदि तुम अपने भाई का सम्मान नहीं करते तो तुम ईश्वर की पूजा कैसे कर सकते हो? इस प्रकार स्वामी जी सम्पूर्ण मानवता का कल्याण करना चाहते थे। वे मानवता की सेवा को ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा मानते थे। वे समाज के सभी व्यक्तियों को धन, विद्या तथा ज्ञान का उपार्जन करने के लिए एक समान अवसर देने के पक्षधर थे। जो सामाजिक नियम इसमें बाधक हो उसे नष्ट कर देने का उपाय शीघ्र ही करना चाहते थे। शिक्षा ऐसी हो जो विद्यार्थियों को दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में सहायक हो।

स्वामी जी समानता को प्रमुख मानते थे। अतः वे स्त्री-पुरुष की शिक्षा समान रूप से देने को कहते थे। वे जनसमूह साधारण की शिक्षा द्वारा बुद्धि का प्रसार करना चाहते थे। टैगोर मानते थे कि यदि तुम भारत को जानना चाहते हो तो विवेकानंद का अध्ययन करो। स्वामी जी मानते थे कि जो लोग शिक्षित हैं उन्हें जन-जन को शिक्षित करने में अपनी भूमिका सिद्ध करनी चाहिए। राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु गाँव-गाँव, घर-घर जाकर प्रत्येक मानव को शिक्षा देकर जागृत करना परमावश्यक है।

सन्दर्भ :

- राय, डॉ. अनोज एवं दिप्ती सजवन (2017)। स्वामी विवेकानंद का मानव निर्माणकारी शैक्षिक दृष्टिकोण। इंटरनेशनल एवं रिसर्च जर्नल।
- प्रेमी, महेंद्र कुमार (2012)। संस्कृति शिक्षा एवं धर्म के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद का दर्शन : एक दर्शनशास्त्रीय विवेचन। रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनीटिज एंड सोशल साइंस।
- गुप्ता, एस.पी. (2017)। अनुसंधान संदर्शिका। शारदा पुस्तक भवन। पृ. 60-61, इलाहाबाद।
- उपाध्याय, पी (2013)। भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ। शारदा पुस्तक भवन। पृ. 256-291, इलाहबाद।
- सिंह, ए.के. (2013), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ। मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 1-29, वाराणसी।
- लाल, आर.बी. और तोमर, जी.सी. (2004)। विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक। आर लाल बुक डिपो मेरठ।
- पाण्डेय, आर. (2008)। विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री। अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
- पाण्डेय, डॉ. आर. और कपूर, डॉ. बी. (2008)। शिक्षा के दार्शनिक आधार। विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- शर्मा, ओ.पी. (2008)। शिक्षा के दार्शनिक आधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- सक्सेना, डॉ. एस. (2010)। शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार। साहित्य प्रकाशन आगरा।

□□□

1. सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.), ई-मेल : sunil.desoriya@gmail.com

2. शोध छात्र, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.), ई-मेल : ashwanikumar12120@gmail.com